आगरा के कला कौशल

आगरा पर अनेक देशी-विदेशी शासकों ने शासन किया इनमें से कुछ ने इस नगर को अपनी राजधानी बनाया। इस शासकों ने विभिन्न कलाओं के जानकारों को बुलाकर राजाश्रय प्रदान किया। कई नये काम-धन्धे भी शुरू कराये। इससे यहाॅं अनेक कलायें विकसित हुई। यही कारण है, कि आगरा वर्षो तक देश में कला कौशल एवं व्यापार की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण बना रहा। कालान्तर में विज्ञान तथा तकनीकि क्षेत्र में आये परिवर्तनों ने विभिन्न उत्पादों के निर्माण का तौर-तरीका ही बदल दिया फिर भी आगरा नूतन के साथ अपने पुरातन कला कौशल को सहेज कर रख पाने में सफल रहा है। देश में बहुत ही कम ऐसे नगर होंगे, जहाॅं इतनी सारी हस्तकलाएं एक साथ फलीफूली हों।

शिल्पकला/मूर्तिकला

आगरा का शिल्पकला/पार्थवला या मूर्तिकला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है। यहाॅं के कई मुहल्लों (गोकुलपुरा, खतैना, किशोरपुरा, ताजगंज, नाई की मण्डी, पचकुइयाॅं आदि) में अलाबस्टर, गोरारा, सलेम, पत्थरों से देवी देवताओं के साथ-साथ तरह-तरह के पशु-पक्षियों की मनमोहक मूर्तिया, ताजमहल की अनुकृतियाॅं, लैम्प, डिब्बियां, बुक लेट्स, प्लेट्स, पेन स्टैण्ड, ऐश ट्रे, जालिया, सिगरेट बाॅक्स आदि बनाये जाते है। हस्तशिल्प के इस कार्य में अनेक पीढ़ियों से जुड़े इन कारीगरों की बनायी गयी कलाकृतियों की देश विदेश में बहुत मांग है। आगरा के कई शिल्पकारों को राज्य और राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिल चुके है।

पच्चीकारी

आगरा में पच्चीकारी की शुरूआत कराने का श्रेय मुगल सम्राट जहाॅंगीर की बेगम नूरजहाॅं को है। उन्होनें इस कला का उपयोग अपने पिता एत्माद्दौला की याद में बने संगमरमर से निर्मित मकबरे में कराया। पच्चीकारी में सफेद संगमरमर पर विभिन्न प्रकार के पुष्पों-बेल-बूटों की डिजाइनें बनाकर गुदाई करने के बाद रंग-बिरंगे पत्थर भर दिये जाते थे। इससे इमारतों की खूबसूरती में चार चाॅंद लग जाते है। मुगल साम्राज्ञी नूरजहाॅं के बाद मुगल सम्राट शाहजहाॅं ने पच्चकारी का इस्तेमाल ताजमहल तथा अन्य इमारतों में किया।

वर्तमान में दयालबाग में बन रहे 'राधास्वामी मंदिर ' में भी इसका भरपूर उपयोग किया जा रहा है। आजकल पच्चीकारी का उपयोग टेबल, टाॅप, प्लेट, गुलदस्तों आदि पर किया जाता है। आगरा में पच्चीकारी मुख्यतः ताजगंज, पन्नीगली, नाई की मंडी आदि मुहल्लों में की जाती है। पच्चीकारी से सजी वस्तुओं का निर्यात किया जाता है।

जरदोजी/रेशमदोजी

देश की प्राचीन हस्तकलाओं में, फैशन के क्षेत्र में आये तमाम बदलावों के बावजूद जरदोजी/रेशमदोजी का महत्व बराबर बना रहा है। यह काशीवाकारी की विभिन्न विधाओं में से एक अति विशिष्ट विधा है। जरदोजी अत्यन्त

कलात्मक और चित्ताकर्षक कला है। इसमें जरी या सलमा सिताओं का उपयोग किया जाता है। जब कढ़ाई में केवल रेशम का उपयोग किाय जाता है तो इसे 'रेशमदोजी कहा जाता है।

काशीदाकारी की इस विद्या का इस्तेमाल ज्यादातर पर्स, बैल्ट, बैज, मोनोग्राम, पैनल, मंदिरों के श्रंृगार की पोशाकों, छविगृहों के पर्दो, फिल्मों या नाटकों, रामलीला के कलाकारों की पोशाकों के बनाने में किया जाता है। आगरा में यह कार्य लोहामंडी, वजीरपुरा, ताजगंज, आलमगंज, खातीपाड़ा, नाई की मंडी, गोकुलपुरा, खतैना, पन्नीगली, अब्बूलाला की दरगाह क्षेत्र मे होता है। आगरा में जरदोजी कला में उल्लेखनीय योगदान के लिए शेख शम्सुद्दीन तथा फजल मोहम्मद को अनेक पुरस्कारों के साथ-साथ पद्मश्री से भी सम्मानित किया गया है।

कालीन उद्योग

आगरा में कालीन उद्योग की स्थापना का श्रेय भी ठण्डे मुल्कों से आये शासकों को जाता है। आगरा में निर्मित ऊनी कालीनों का बड़े स्तर पर निर्यात होता है। ब्रिटिश शासन में आॅटो बैलेण्ड नामक जर्मन नागरिक ने यमुना किनारे गलीचा बनाने का कारखाना 'ईस्ट इंण्डिया कारपेट' में मिल गया।

आगरा में कालीन मुख्यतः ताजगंज, नाई की मण्डी, लोहामण्डी, जगदीशपुरा, दयालबाग तथा निकटवर्ती गांवों कोलारा, कलां, कुण्डौल, गढ़ी रग्घू, बांगुरी, सुजगई (बरौली अहीर) दिगनेर, एत्मादपुर में होता है। आगरा के प्रमुख कालीन व्यवसायी हरीकृष्ण बातल इस विद्या मंे विशिष्ट योगदान के लिये पद्मश्री प्राप्त कर चुके है।

जूता उद्योग

आगरा में जूता उद्योग काफी पुराना है। मुगल सम्राट अकबर के शासन काल में अरब देशों से हींग मंगायी जाती थी। यह हींग ऊँट के चमड़े की बनी मशकों में रखकर आज के हींग की मंडी बाजार में लायी जाती थी। अरब व्यापारियों द्वारा फेंकें हींग मशकों के चमड़े से जूते बनाये जाने लगें। सन् 1650 में आगरा से सबसे पहले इंग्लैड को जूते भेजे गये।

वर्तमान मंे जूता उद्योग इस नगर का प्रमुख उद्योग बना हुआ है। यहाॅं के बनाये हुए जूते, चप्पलें तथा चमड़े का पर्स, बैल्ट, बैग आदि की देश और विदेश में काफी मांग है। आगरा में विभिन्न प्रकार की डिजायनों तथा गुणवत्ता वाले जूते एवं चप्पल बनायी जाती है।

मिट्टी और कागज की लुगदी के खिलौने

आगरा में बड़ी मात्रा मंे मिट्टी और कागज की लुगदी के सुन्दर खिलौने बनाये जाते है। ये मूर्तियाॅं अत्यन्त मोहक और सजीव प्रतीत होती है। ये मूर्तियाॅं दशहरा जन्माष्टमी और दीपावली के अवसर पर देश के दूसरे नगरों को भारी मात्रा में भेजी जाती है। इनमें ज्यादातर मूर्तियाॅं देवी-देवताओं, पशु-पक्षियों, फूल-फलों की होती है। इनके रंग चटकीले एवं स्वाभाविक लगते है। कागज की लुगदी की मूर्तियाॅं वजन में बहुत हल्की और

टिकाऊ होती है। इनके रंग वर्षो तक जैसे के तैसा बना रहता है। आगरा में खिलौने छिलीईट घटिया, पुल छिंगा मोदी, सिरकी मंडी, ईदगाह, चित्रा सिनेमा के आस-पास के मुहल्लों में बनाये जाते है।

ढलाई उद्योग

आगरा में लोहे की ढलाई उद्योग का इंतिहास भी सैकड़ों वर्षो पुराना है। प्रथम मुगल शासक बाबर ने अपने साथ लाई तोपों के बलबूते पर ही पानीपत का प्रथम युद्ध तथा खानवा की लड़ाई में सफलता पायी थी। सम्भवतः उसने ही तोपों, हथियारों, तथा दूसरी उपयोगी चीजों की ढलाई का कार्य बड़े पैमाने पर शुरू कराया। उससे पहले यहाॅं के लुहार भी देश के अन्य नगर, गांवों की भांति छोटे स्तर पर हथियार, कृषि यंत्र आदि बनााय करते थे। आजादी के पहले आगरा नगर में चार बड़े ढलाईघर (आयरन फाउण्ड्रियाॅं) थी। 'प्रभात आयरन फाउण्ड्री फ्रीगंज, मल्लोमल राम प्रसाद आयरन फाउण्ड्री लैन गऊशाला, गुलाब राम छोटे लाल आयरन फाउण्ड्री, अयोध्या प्रसाद वर्मा आयरन फाउण्ड्री। इन ढलाई घरों में गन्ना पेरने के कोल्हू, बांट, कुएं की गराड़ी खलड़, मूसली, चारा काटने की मशीन, बैलगाड़ियों का सामान लोहे की जालियां, आदि की ढलाई की जाती थी।

देश में आजाद होने के बाद आगरा के फाउण्ड्री उद्योग ने भी तेजी से प्रगति की। इसके विकास हेतु 1952 में नुनिहाई क्षेत्र में आद्योगिक क्षेत्र (इण्डस्ट्रियल एरिया) की नींव रखी गयी जहाॅं अधिकतर ढलाई घर उससे सम्बन्धित इंजीनियरिंग और कई दूसरे उद्योग स्थापित किये गये। फिर 1960 में यमुना पर औद्यौगिक क्षेत्र विकसित करने की योजना पर कार्य शुरू किया। इसी क्रम में सन् 1974-75 में यहाॅं फाउण्ड्री नगर की आधारशिला रखी गयी ताकि नगर की सघन वस्तियों में कार्यरत फाउण्ड्रियों के स्थानान्तरित किया जा सके। अब से कई एक दशक पहले शहर में 226 के करीब आयरन फाउण्ड्री पंजीकृत थी। इनके अलावा 340 के करीब ढलाई घर थे। इन सभी में दो लाख से ज्यादा श्रमिकों को काम मिला हुआ था।

आयरन फाउण्ड्रियों में डीजल, जनरेटर सैट, पम्प, आटा चक्कियों, खराद मशीनें, जूते बनाने के काम आने वाली मशीनें, बांट, पिस्टन, रिंग्स, खल्लड़, मूसली आदि की ढलाई होती है। वर्तमान में ताजमहल को प्रदूषण से बचाने के लिए सर्वोच्च न्यायालय द्वारा इनमें कोयले के इस्तेमाल पर रोक लगा दी गयी है।

आभूषण उद्योग

आगरा में सोने चांदी के आभूषणों का निर्माण सदियों से होता चला आ रहा है। विभिन्न शासकों को काल में आभूषणों के आकार-प्रकार तथा डिजायनों में बदलाव होता रहा है। आगरा के स्वर्णकारो द्वारा बनाये गये आभूषण दूर-दूर के नगरों में स्वर्णकार खरीदकर ले जाते है। वर्तमान में अंगूठी तथा कालरा, चूड़ियाॅं, दस्ताने बनाने में डाइयां प्रयुक्त होती है। आगरा में 25 हजार के लगभग स्वर्णकार (कारीगर) है। जिनकी किनारी बाजार शाह काॅम्पलैक्स, सेब का बाजार, पथवारी, बेलनगंज, लोहामण्डी, ताजगंज, शाहगंज, राजामण्डी, सुल्तानपुरा, नगलापदी आदि में दुकानें है। आगरा में चांदी के आभूषण पाजेब (तोड़ियां) बिछुओं तथा दूसरे आभूषणों का कारोबार भी बड़े पैमाने पर होता है पीतल की चेन बनाने का कारेबार भी यहाॅं प्रगति पर है।

वर्तमान निर्माण

आगरा में रसोई घर तथा खाने-पीने के कार्यो में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न आकार-प्रकार तथा धातुओं (पीतल, कांसे) के बर्तनों के निर्माण का कार्य प्रारम्भ से ही होता आया है। वर्तमान में स्टील के बर्तन के चलन और मुरादाबाद के बने बर्तनों की बिक्री के कारण शहर में यह कार्य बहुत ही कम हो गया है। लेकिन अब भी गोकुलपुरा स्थित गली ठठेरान में कांसे की थालियाॅं तथा अन्य कई प्रकार के बर्तन बनाने का कार्य किया जा रहा है।

पेठा और दालमोठ

आगरा शहर की पहचान ताजमहल के बाद यदि किसी चीज से की जाती है तो वह यहाॅं का बना पेठा है जिसका उपयोग आम आदमी से लेकर खास आदमी भी करता है। कुछ लोगों का कहना है कि पेठे की मिठाई की शुरूआत मुगल सम्राट अकबर के शासन काल में हुई। आगरा में पेठा बनाने वाली सबसे पुरानी फर्म 'भीमसैन बैजनाथ ' है जिसकी स्थापना संन् 1865 मंे हुई थी। पेठे की मिठाई मुख्यतः कुम्हड़ा फल तथा चीनी से बनायी जाती है। पेठा दो रंगो से मिलता है सफेद और लाल रंग का। सफेद पेठा चीनी से और लाल रंग का पेठा देसी खाड़ से बनाया जाता है। एक विशिष्ट प्रकार का पेठा भी बनाया जाता है जिसे 'केसर इलायची का पेठा ' भी कहते है। आगरा में पेठा नूरी दरवाजा, शीतला गली, दरेसी नं0-2, जौहरी बाजार, पेठा नगर आदि में बनता और बिकता है। हालांकि पेठा बनाने के और भी जगहों पर प्रयास किये गये है लेकिन स्वाद के मामले में आगरा में निर्मित पेठे की बात ही कुछ और है।

बेसन के महीन सेव, साबूत मोठ, गरम मसाला, नीबू के मस (टाटरी) से बनायी जाती है। दालमोठ यह नमकीन देश में बनये जाने वाले अन्य नमकीनों से हर मामले में भिन्न और जायकेदार है।

पतंग

आगरा में पतंग बनाने का कार्य भी काफी पुराना है। यहा की बनी पतंगे देश के अनेक प्रमुख नगरों जयपुर, अजमेर, अहमदाबाद, लुधियाना, सूरत, कलोल (गुजरात) आदि में भेजी जाती है। इस शहर के गुदड़ी मंसूर खां, माल का बाजार, काला महल पर स्थित पतंग व्यवसायी ठेके पर पतंगे बनवाते है। पतंग निर्माण में खपच्चियाॅं (तिल्लियाॅं) अरारोट, पतले कागज की आवश्यकता होती है। इसके लिए तिल्लियाॅं फर्रूखाबाद और तुलसीपुर गोण्डा से मंगायी जाती है।

चिक

कभी बांस की बने चिकें कोठी, बंगलों तथा नौकरशाहों के कार्यालयों की सजावट का अहम हिस्सा हुआ करती थी। चिकें पर्दे का कार्य करती हैं जो बार-बार दरवाजा खोलने बंद करने की तुलना में काफी आसान और सुविधाजनक होता है। ऐसे ही बरामदें मंे लगी चिकों जहाॅं जाड़े की ठंड, आंधी की धूल मिट्टी बरसात, की औछार और गर्मी की तपन से बचाती है यही सुबह शाम के सुखद माहौल से रूबरू कराते हुये खुली जगह पर पूरा आनन्द दिलाती है।

आगरा में चिकें बनाने का कार्य बालूगंज, मदिया कटरा, आदि में होता है। ये कार्य कुटीर उद्योग के रूप में किया जाता है।

मोर पंखों की वस्तुयें

आगरा में मोर पंखों के विभिन्न प्रकार के पंख, मोहन गुलदस्ते, मोरछल मोरी की अनुकृतियाॅं बनायी जाती है। ये सभी वस्तुयें अत्यन्त मोहक और सुन्दर होती है। आगरा में मोरपंख की वस्तुयें ताजमहल, लालकिया, सिकन्दरा, फतेहपुर सीकरी, पांच सितारा होटलों, रेलवे स्टेशनों, बस अड्डों पर बेची जाती है। जहाॅं देशी-विदेशी पर्यटक खरीदते है।

चांदी के वर्क

चांदी के वर्क का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। ये विभिन्न पकवचानों, पान, मुरब्बों, देवी-देवताओं की मूर्तियों, मंदिरों तथा पुरानी हबेलियों के शिखरों को सजाने में प्रयुक्त किये जाते है। इसके सिवाय सुपाड़ी, तम्बाकू आयुर्वेदिक औषधियों से भी काम में लाये जाते है। आगरा में चांदी के वर्क बनाने का काम आने वाली झिल्लीभेड़ की खाल से तैयार की जाती है। इसे यहा के खटीक पाड़े मुहल्ले में रहने वाले लोग बनाते है। इनकी बनायी झिल्ली का उपयोग जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, कानपुर, मुंबई, सूरत, मेरठ, वाराणसी, दिल्ली, अहमदाबाद, आदि नगरों में चांदी वर्क तैयार करने में किया जाता है।